Journal Homepage: www.ijarpr.com ISSN: 3049-0103 (Online)

International Journal of Advance Research Publication and Reviews

Vol 03, Issue 10, pp 291-300, October, 2026

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का युवाओं की वैचारिकी पर प्रभाव: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

धर्मेन्द्र[1], डॉ अंचल गुप्ता[2]

[1] शोधार्थी (समाजशास्त्र विभाग), महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली (उत्तर प्रदेश)

[2] प्रो समाजशास्त्र विभाग , गोकुलदास हिन्दू गर्ल्स कॉलेज मुरादाबाद

सारांश

कृत्रिम बुद्धिमत्ता वर्तमान अंकीय समाज की उन परिवर्तनकारी तकनीकों में है जो केवल कार्यों को स्वचालित नहीं करती, बल्कि सूचना के चयन, ज्ञान-निर्माण, संवाद, पहचान, उपभोग, शिक्षा, रोजगार और सामाजिक संबंधों के स्वरूप को भी प्रभावित करती है। युवा वर्ग इस परिवर्तन के केंद्र में है क्योंकि वह अंकीय मंचों, खोज प्रणालियों, अनुशंसा तंत्रों, सृजनात्मक कृत्रिम बुद्धिमत्ता, संवादात्मक संगणकीय सहायकों, स्वचालित अनुवाद, व्यक्तिगत शिक्षण और कलन-विधीय संचार माध्यमों के निरंतर संपर्क में रहता है। इस शोध पत्र में "वैचारिकी" को संकीर्ण राजनीतिक अर्थ में नहीं, बल्कि व्यक्ति के मूल्य-बोध, विश्वासों, सामाजिक दृष्टिकोण, पहचान, आकांक्षाओं, नैतिक निर्णय, ज्ञान के प्रति रुख और समाज को समझने की पद्धति के समेकित ढाँचे के रूप में ग्रहण किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता युवाओं की वैचारिकी को किन प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष प्रक्रियाओं के माध्यम से प्रभावित करती है। शोध पत्र का स्वरूप वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक और अवधारणात्मक है तथा इसमें समाजशास्त्रीय सिद्धांतों, समकालीन अध्ययनों, नीतिगत दस्तावेजों और द्वितीयक स्रोतों का समेकित उपयोग किया गया है। विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता युवाओं के लिए ज्ञान और अवसरों का विस्तार, भाषाई सुगमता, वैयक्तिकृत अधिगम और सृजनात्मक सहयोग उपलब्ध कराती है; साथ ही कलन-विधीय चयन, पुष्टिकरण पूर्वाग्रह, गलत सूचना, आँकड़ा-आधारित निगरानी, निर्भरता, आलोचनात्मक चिंतन के क्षरण और अंकीय असमानता जैसी चुनौतियाँ भी उत्पन्न करती है। अतः इसका प्रभाव न तो पूर्णतः सकारात्मक है और न पूर्णतः नकारात्मक; वह तकनीकी संरचना, उपयोगकर्ता की स्वायत्त क्रियाशीलता, सामाजिक पृष्ठभूमि, अंकीय साक्षरता और संस्थागत मार्गदर्शन के पारस्परिक संबंध से निर्मित होता है।

प्रमुख शब्द: कृत्रिम बुद्धिमत्ता, युवा, वैचारिकी, समाजशास्त्र, कलन-विधि, अंकीय समाज, पहचान, कृत्रिम बुद्धिमत्ता साक्षरता

प्रस्तावना

इक्कीसवीं सदी के तीसरे दशक में कृत्रिम बुद्धिमत्ता सामाजिक जीवन के लगभग प्रत्येक क्षेत्र में उपस्थित दिखाई देती है। पहले अंकीय तकनीक का प्रभाव मुख्यतः संचार की गति, सूचना की उपलब्धता और प्रशासनिक दक्षता तक सीमित माना जाता था, किंतु अब कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने उस स्तर पर हस्तक्षेप प्रारंभ किया है जहाँ मनुष्य यह तय करता है कि वह क्या पढ़े, किस पर विश्वास करे, किससे संवाद करे, किस कौशल को आवश्यक समझे, किस प्रकार स्वयं को प्रस्तुत करे और भविष्य के बारे में कैसी आकांक्षा निर्मित करे। युवाओं के लिए यह परिवर्तन विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि शिक्षा, मित्रता, मनोरंजन, जीविका, सामाजिक प्रतिष्ठा और सार्वजनिक विमर्श से संबंधित बड़ी मात्रा में अनुभव अब अंकीय माध्यमों से निर्मित होते हैं। इस कारण कृत्रिम बुद्धिमत्ता को केवल तकनीकी उपकरण मानना अपर्याप्त है; वह सामाजिकरण की उभरती हुई संस्था, ज्ञान का मध्यस्थ, सांस्कृतिक चयनकर्ता और व्यवहार को संकेत देने वाली संरचना के रूप में भी देखी जा सकती है।

समाजशास्त्रीय दृष्टि से युवा अवस्था पहचान-निर्माण, मूल्य-निर्धारण, भूमिका-अभ्यास और भविष्य की दिशा तय करने का संवेदनशील चरण है। परिवार, शिक्षा, सहकर्मी समूह, धर्म, समुदाय और संचार माध्यम लंबे समय से सामाजिकरण के प्रमुख साधन रहे हैं। अंकीय समाज में इन पारंपरिक एजेंसियों के साथ मंच, खोज प्रणाली, सामाजिक संचार माध्यम का सामग्री-प्रवाह, अनुशंसा तंत्र और कृत्रिम बुद्धिमत्ता सहायक एक नई मध्यस्थ परत जोड़ते हैं। इन प्रणालियों की विशेषता यह है कि वे केवल उपलब्ध सामग्री दिखाती नहीं हैं; उपयोगकर्ता के व्यवहार, पसंद, समय, चयन, भाषा, स्थान-संकेत और पूर्व संवाद के आधार पर सामग्री को क्रमबद्ध और वैयक्तिकृत करती हैं। इस प्रक्रिया में युवा जिस सामाजिक यथार्थ से परिचित होता है, वह आंशिक रूप से कलन-विधीय चयन द्वारा निर्मित होता है। इसलिए वैचारिकी पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रभाव समझने के लिए यह देखना आवश्यक है कि तकनीकी संरचना और सामाजिक संदर्भ मिलकर किस प्रकार अनुभवों का ढाँचा बनाते हैं।

अध्ययन की केंद्रीय अवधारणाएँ

कृत्रिम बुद्धिमत्ता से आशय ऐसे संगणकीय तंत्रों से है जो आँकड़ों के आधार पर प्रतिरूप पहचानते हैं, अनुमान लगाते हैं, भाषा समझते या उत्पन्न करते हैं, चित्र और ध्वनि का विश्लेषण करते हैं, अनुशंसा देते हैं अथवा किसी कार्य को स्वचालित रूप से संपन्न करते हैं। वर्तमान संदर्भ में यंत्र-अधिगम, गहन अधिगम, प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण, अनुशंसा कलन-विधियाँ और सृजनात्मक कृत्रिम बुद्धिमत्ता इसके प्रमुख रूप हैं। युवा इन प्रणालियों से प्रत्यक्ष रूप से संवादात्मक संगणकीय सहायकों के माध्यम से तथा

अप्रत्यक्ष रूप से सामाजिक संचार माध्यमों के सामग्री-प्रवाह, अंतरजाल-आधारित विज्ञापन, चलचित्र अनुशंसा, खोज क्रम-निर्धारण और शैक्षिक मंचों के माध्यम से जुड़ते हैं। इसलिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता का अध्ययन किसी एक संवादात्मक उपकरण तक सीमित नहीं होना चाहिए; उसे उस व्यापक कलन-विधीय परिवेश को भी समाहित करना चाहिए जो अंकीय अनुभव का चयन, क्रम और संगठन करता है।

इस शोध पत्र में "युवा" शब्द से मुख्यतः किशोरावस्था के उत्तरार्द्ध से लेकर प्रारंभिक वयस्कता तक के उस समूह का बोध है जो शिक्षा, कौशल, रोजगार और सामाजिक पहचान के संक्रमणशील चरण में है। यह एक समान समूह नहीं है। लिंग, वर्ग, जाति, ग्रामीण-शहरी स्थिति, भाषा, शिक्षा की गुणवत्ता और अंकीय संसाधनों की उपलब्धता युवाओं के अनुभव में महत्वपूर्ण अंतर उत्पन्न करते हैं। इसलिए किसी एक "युवा वैचारिकी" की कल्पना के बजाय वैचारिक प्रवृत्तियों की बहुलता को स्वीकार करना आवश्यक है।

"वैचारिकी" का अर्थ यहाँ ऐसी संगठित मानसिक-सामाजिक संरचना से है जिसमें मूल्य, विश्वास, सामाजिक धारणाएँ, नैतिक प्राथमिकताएँ, आत्म-पहचान, आकांक्षाएँ और किसी विषय पर निर्णय बनाने की आदतें शामिल होती हैं। वैचारिकी व्यक्ति के व्यवहार का कठोर और अपरिवर्तनीय निर्देश नहीं होती; वह अनुभव, शिक्षा, समूह-संपर्क और सामाजिक परिवर्तन के साथ संशोधित होती रहती है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता इसी परिवर्तनशील क्षेत्र में प्रवेश करती है। जब कोई युवा बार-बार किसी विशेष प्रकार की सामग्री देखता है, कृत्रिम बुद्धिमत्ता से उत्तर प्राप्त करता है, अंकीय समुदाय में समान विचार वाले लोगों से जुड़ता है अथवा अपनी शिक्षा और जीविका संबंधी योजना यंत्र-सहायित सलाह से बनाता है, तब तकनीक धीरे-धीरे उसकी "संभावित दुनिया" की सीमा, भाषा और प्राथमिकताओं को प्रभावित कर सकती है।

समाजशास्त्रीय सैद्धांतिक आधार

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और युवा वैचारिकी के संबंध को समझने के लिए समाजीकरण का सिद्धांत प्रारंभिक आधार प्रदान करता है। बर्जर और लकमैन ने सामाजिक वास्तविकता को निरंतर निर्मित और संस्थाबद्ध होने वाली प्रक्रिया के रूप में समझाया। अंकीय युग में ज्ञान और अर्थ की यह सामाजिक निर्मिति अब मनुष्य-यंत्र अंतःक्रिया से भी प्रभावित होती है। युवा जब किसी कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रणाली से जानकारी प्राप्त करता है, तो वह प्रायः उस उत्तर को बातचीत की सहज शैली में ग्रहण करता है। इससे यंत्र द्वारा प्रस्तुत सूचना वस्तुनिष्ठ अथवा तटस्थ प्रतीत हो सकती है, जबकि उसके पीछे आँकड़ा-चयन, प्रतिरूप-अभिकल्पना और संभाव्य गणना कार्य कर रही होती है। इस प्रकार कृत्रिम बुद्धिमत्ता ज्ञान के सामाजिक निर्माण में एक नया मध्यस्थ बनती है।

कैस्टेल्स की "संजाल समाज" की अवधारणा स्पष्ट करती है कि समकालीन शक्ति और संचार संजालों के माध्यम से संचालित होते हैं। आज सूचना की दृश्यता केवल सामग्री की गुणवत्ता पर निर्भर नहीं है; मंचों की क्रम-निर्धारण और अनुशंसा प्रणालियाँ यह तय करती हैं कि कौन-सी सामग्री अधिक लोगों तक पहुँचेगी। गिलेस्पी और बुकर जैसे विद्वानों ने कलन-विधीय शक्ति की इसी मध्यस्थ भूमिका पर ध्यान दिया है। युवा जिस अंकीय संजाल में सक्रिय हैं, उसमें दृश्यता, लोकप्रियता और प्रासंगिकता के मानक आंशिक रूप से स्वचालित प्रणालियों द्वारा निर्मित होते हैं। परिणामस्वरूप "क्या सामान्य है", "क्या प्रचलन में है" और "किन विचारों पर ध्यान देना चाहिए" जैसी धारणाएँ तकनीकी चयन से प्रभावित हो सकती हैं।

बूर्दियू की पूँजी और अभ्यस्त प्रवृत्ति संबंधी अवधारणाएँ अंकीय असमानता को समझने में उपयोगी हैं। केवल अंतरजाल उपलब्ध होना समान लाभ की गारंटी नहीं देता। जिन युवाओं के पास अच्छी शिक्षा, बहुभाषी दक्षता, आलोचनात्मक पठन, तकनीकी समझ और विश्वसनीय संस्थागत मार्गदर्शन है, वे कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग ज्ञान-विस्तार और सृजनात्मकता के लिए अधिक प्रभावी ढंग से कर सकते हैं। दूसरी ओर सीमित अंकीय साक्षरता वाले युवा तैयार उत्तरों पर अधिक निर्भर हो सकते हैं या गलत सूचना को पहचानने में कठिनाई अनुभव कर सकते हैं। इस प्रकार "कृत्रिम बुद्धिमत्ता साक्षरता" नई सांस्कृतिक पूँजी के रूप में उभरती है, जो अवसरों और वैचारिक स्वायत्तता दोनों को प्रभावित करती है।

साहित्य समीक्षा

युवाओं और कलन-विधीय संचार माध्यमों पर उपलब्ध शोध पत्र यह बताते हैं कि अंकीय प्रणालियों का प्रभाव केवल दृश्य-पटल पर बिताए समय तक सीमित नहीं है। स्वार्ट (2021) ने 16 से 26 वर्ष के युवाओं के साथ किए गए अध्ययन में पाया कि वे समाचार चयन में कलन-विधियों की उपस्थिति को अनुभव तो करते हैं, किंतु उस अनुभव को स्पष्ट तकनीकी भाषा में व्यक्त करना हमेशा संभव नहीं होता। कलन-विधीय साक्षरता प्रायः तब सक्रिय होती है जब अनुशंसा अपेक्षा से भिन्न हो या मंच व्यक्तिगत चयन को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करे। इसका अर्थ यह है कि युवा कलन-विधियों के साथ सक्रिय संबंध रखते हैं, पर उनकी जागरूकता असमान और संदर्भ-निर्भर होती है। वैचारिकी के संदर्भ में यह तथ्य महत्वपूर्ण है क्योंकि व्यक्ति जिस चयन-प्रक्रिया को नहीं देखता, उसका प्रभाव अधिक सहज और स्वाभाविक प्रतीत हो सकता है।

मुन्योस-रोद्रिगेज तथा सहयोगियों (2023) ने रेखांकित किया कि युवाओं की पहचान-प्रथाएँ तकनीक द्वारा मध्यस्थित हो रही हैं। अंतरजाल-आधारित जोखिम की अनुभूति, जुड़ाव की आवश्यकता और अंकीय उपस्थिति के बीच संबंध यह दर्शाता है कि अंकीय परिवेश सामाजिक पहचान के निर्माण का बाहरी मंच मात्र नहीं है; वह भावनात्मक सुरक्षा, स्वीकार्यता और समूह-सदस्यता के अनुभव से भी जुड़ता है। जब कृत्रिम बुद्धिमत्ता यह निर्धारित करती है कि किस सामग्री या समुदाय का सुझाव दिया जाए, तो वह संभावित रूप से पहचान के उपलब्ध संदर्भों को भी व्यवस्थित करती है।

संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन की 2023 की सृजनात्मक कृत्रिम बुद्धिमत्ता संबंधी मार्गदर्शिका मानव-केंद्रित दृष्टिकोण पर बल देती है। इसमें आँकड़ों की गोपनीयता, आयु-उपयुक्त उपयोग, नैतिक सत्यापन और शैक्षिक संस्थानों की तैयारी को महत्वपूर्ण माना गया है। मार्गदर्शिका का तर्क है कि सृजनात्मक कृत्रिम बुद्धिमत्ता शिक्षा में रचनात्मक अवसर देती है, परंतु शिक्षण के उद्देश्यों, मूल्यांकन और ज्ञान-निर्माण की प्रक्रियाओं की पुनर्समीक्षा भी आवश्यक बनाती है। यह चिंता सीधे युवा वैचारिकी से जुड़ती है, क्योंकि शिक्षा केवल सूचना देने की प्रक्रिया नहीं है; वह तर्क, प्रमाण, असहमति, नैतिकता और सामाजिक जिम्मेदारी की समझ विकसित करती है। यदि कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग केवल उत्तर प्राप्त करने के साधन के रूप में हो, तो ज्ञान की प्रक्रिया कमजोर हो सकती है; यदि उसका उपयोग प्रश्न पूछने, तुलना करने और विचारों की आलोचना के लिए हो, तो वैचारिक परिपक्वता बढ़ सकती है।

संयुक्त राष्ट्र बाल कोष की 2025 की "कृत्रिम बुद्धिमत्ता और बच्चों संबंधी मार्गदर्शिका" तथा भारत में बच्चों और युवाओं के लिए उत्तरदायी कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर प्रकाशित सामग्री सुरक्षा, आँकड़ों की गोपनीयता, निष्पक्षता, पारदर्शिता, समावेशन और कौशल-विकास को केंद्रीय महत्व देती है। संयुक्त राष्ट्र बाल कोष, भारत ने व्यापक युवा परामर्श के आधार पर रेखांकित किया कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता शिक्षा और अवसरों का विस्तार कर सकती है, किंतु गलत सूचना, कृत्रिम रूप से निर्मित भ्रामक दृश्य-श्रव्य सामग्री, गोपनीयता-हानि और भावनात्मक निर्भरता जैसे जोखिम भी उत्पन्न हो सकते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि तकनीकी प्रभाव का मूल्यांकन केवल दक्षता के आधार पर

नहीं किया जा सकता; मानव गरिमा, स्वायत्तता और सामाजिक न्याय भी विश्लेषण के आवश्यक आयाम हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

1. युवाओं की वैचारिकी पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रभाव की प्रमुख सामाजिक प्रक्रियाओं की पहचान करना।

2. यह विश्लेषण करना कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता-आधारित सूचना, अनुशंसा और जनरेटिव प्रणालियाँ युवाओं के ज्ञान, विश्वास और सामाजिक दृष्टिकोण को किस प्रकार प्रभावित करती हैं।

3. युवाओं की पहचान, आकांक्षा, शिक्षा, जीविका और सामाजिक संबंधों के निर्माण में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भूमिका का समाजशास्त्रीय अध्ययन करना।

4. कृत्रिम बुद्धिमत्ता से उत्पन्न अवसरों और जोखिमों के बीच संतुलन का परीक्षण करना, विशेष रूप से आलोचनात्मक चिंतन, गोपनीयता, गलत सूचना और निर्भरता के संदर्भ में।

5. अंकीय असमानता, भाषा, लिंग, वर्ग और ग्रामीण-शहरी पृष्ठभूमि के आधार पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रभाव में संभावित भिन्नताओं का विश्लेषण करना।

6. युवा वैचारिक स्वायत्तता को मजबूत करने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता साक्षरता, संस्थागत मार्गदर्शन और उत्तरदायी उपयोग से संबंधित सुझाव प्रस्तुत करना।

परिकल्पनाएँ

1. कृत्रिम बुद्धिमत्ता के नियमित उपयोग और युवाओं के ज्ञान-स्रोतों में विविधता के बीच सकारात्मक संबंध हो सकता है, बशर्ते उपयोगकर्ता स्रोत-परख की क्षमता रखता हो।

2. अत्यधिक वैयक्तिकृत कलन-विधीय सामग्री युवाओं की पूर्व-स्थापित धारणाओं की पुष्टि करने की प्रवृत्ति को बढ़ा सकती है।

3. कृत्रिम बुद्धिमत्ता साक्षरता का उच्च स्तर युवाओं में आलोचनात्मक चिंतन, स्रोत सत्यापन और स्वतंत्र निर्णय की क्षमता को मजबूत करता है।

4. सृजनात्मक कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर अत्यधिक निर्भरता स्वतंत्र लेखन, समस्या-समाधान और वैचारिक आत्मनिर्भरता को कमजोर कर सकती है।

5. सामाजिक-आर्थिक और शैक्षिक असमानताएँ कृत्रिम बुद्धिमत्ता से प्राप्त लाभों और उससे जुड़े जोखिमों की प्रकृति को प्रभावित करती हैं।

6. उचित शैक्षिक मार्गदर्शन के साथ कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग युवाओं में रचनात्मकता, बहु-दृष्टिकोण और ज्ञान तक पहुँच का विस्तार कर सकता है।

शोध पत्र की पद्धति

यह अध्ययन वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक और अवधारणात्मक प्रकृति का है। इसमें किसी काल्पनिक प्राथमिक सर्वेक्षण के निष्कर्ष प्रस्तुत नहीं किए गए हैं। विश्लेषण के लिए समाजशास्त्रीय सिद्धांतों, समकालीन शोध पत्रों, अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं के प्रतिवेदनों और भारत से संबंधित अंकीय तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता नीतिगत दस्तावेजों का द्वितीयक स्रोत के रूप में उपयोग किया गया है। स्रोतों का चयन चार आधारों पर किया गया: युवाओं से प्रत्यक्ष संबंध, कलन-विधीय अथवा सृजनात्मक कृत्रिम बुद्धिमत्ता की प्रासंगिकता, समाजशास्त्रीय व्याख्या की उपयोगिता और स्रोत की विश्वसनीयता। अध्ययन में व्याख्यात्मक संश्लेषण पद्धति अपनाई गई, जिसके अंतर्गत विभिन्न निष्कर्षों को एक-दूसरे से जोड़कर उन तंत्रों की पहचान की गई जिनके माध्यम से कृत्रिम बुद्धिमत्ता वैचारिकी को प्रभावित कर सकती है। चूँकि वैचारिकी बहुआयामी अवधारणा है, इसलिए विश्लेषण को ज्ञान, पहचान, मूल्य, आकांक्षा, सामाजिक संबंध, उपभोग, संस्कृति, नैतिकता और स्वायत्तता जैसे आयामों में विभाजित किया गया है।

इस पद्धति की विशेषता यह है कि यह कृत्रिम बुद्धिमत्ता को एक पृथक तकनीक के बजाय सामाजिक संस्थाओं के साथ अंतःक्रिया करने वाली व्यवस्था के रूप में देखती है। अतः परिवार, शिक्षा, सहकर्मी समूह, मंच संरचना, भाषा, बाजार और सार्वजनिक संचार को विश्लेषण में साथ रखा गया है। अध्ययन कारण-परिणाम की निश्चित सांख्यिकीय घोषणा नहीं करता; इसके स्थान पर उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर संभावित संबंधों, मध्यस्थ प्रक्रियाओं और सामाजिक परिणामों की व्याख्या करता है।

सूचना और ज्ञान की संरचना पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रभाव

युवाओं की वैचारिकी के निर्माण में सबसे बुनियादी प्रश्न यह है कि उन्हें दुनिया के बारे में जानकारी कहाँ से और किस रूप में प्राप्त होती है। पारंपरिक शिक्षा में पाठ्यपुस्तक, शिक्षक और पुस्तकालय ज्ञान के प्रमुख स्रोत थे। अंतरजाल ने स्रोतों की संख्या बढ़ाई, जबकि कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने सूचना खोजने और समझने की प्रक्रिया को संवादात्मक बना दिया। अब युवा लंबी वेबसाइट सूची के बजाय प्रश्न पूछकर संक्षिप्त उत्तर प्राप्त कर सकता है, कठिन पाठ को सरल भाषा में समझ सकता है, अनुवाद करा सकता है और अनेक दृष्टिकोणों की तुलना के लिए संकेत दे सकता है। यह परिवर्तन ज्ञान तक पहुँच में लोकतंत्रीकरण की संभावना रखता है, विशेषकर उन विद्यार्थियों के लिए जिन्हें मार्गदर्शक संसाधनों की कमी है।

लेकिन यही सुविधा वैचारिक जोखिम भी उत्पन्न करती है। सृजनात्मक कृत्रिम बुद्धिमत्ता संभाव्यता पर आधारित भाषा उत्पन्न करती है; उसका उत्तर आत्मविश्वासपूर्ण शैली में होने के बावजूद तथ्यात्मक रूप से गलत हो सकता है। यदि युवा उत्तर की भाषा को सत्य का प्रमाण मान ले, तो स्रोत-आधारित ज्ञान की जगह “विश्वसनीय प्रतीत होने वाली” भाषा का प्रभाव बढ़ सकता है। इससे ज्ञानात्मक प्रामाणिकता का आधार बदलता है। पहले विद्यार्थी को यह देखना पड़ता था कि लेखक कौन है, प्रकाशन कहाँ हुआ

है और साक्ष्य क्या हैं; अब यंत्र द्वारा दिया गया संक्षिप्त उत्तर इन मध्यवर्ती चरणों को अदृश्य कर सकता है। इसलिए वैचारिकी की स्वतंत्रता के लिए यह कौशल आवश्यक है कि युवा कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा दिए गए उत्तर को अंतिम सत्य न मानकर प्रारंभिक मसौदा या विश्लेषणात्मक संकेत माने।

वैयक्तिकरण, छँटाई और पुष्टिकरण पूर्वाग्रह

सामाजिक संचार माध्यम, चलचित्र मंच, अंतरजाल-आधारित वाणिज्य और समाचार संकलक उपयोगकर्ता की गतिविधि के आधार पर सामग्री का चयन करते हैं। यह वैयक्तिकरण सुविधा प्रदान करता है क्योंकि अप्रासंगिक सामग्री घटती है और रुचिकर सामग्री तेजी से मिलती है। किंतु जब अनुशंसा प्रणाली निरंतर उन्हीं विषयों, दृष्टिकोणों या भावनात्मक रूप से आकर्षक सामग्री को प्राथमिकता देती है जिनसे उपयोगकर्ता पहले जुड़ चुका है, तब विचारों की विविधता कम हो सकती है। इस स्थिति को "चयन-परिधि" या "प्रतिध्वनि-सदृश सूचना-परिवेश" कहा जा सकता है, यद्यपि उपलब्ध शोध पत्र यह भी बताते हैं कि वास्तविक प्रभाव मंच, उपयोगकर्ता और विषय के अनुसार भिन्न होता है।

वैचारिकी के संदर्भ में महत्त्वपूर्ण बात यह है कि पुष्टिकरण पूर्वाग्रह केवल कलन-विधि से पैदा नहीं होता। मनुष्य स्वयं भी अपने विश्वासों से मेल खाने वाली जानकारी को अधिक सहजता से स्वीकार करता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता इस मानवीय प्रवृत्ति को तकनीकी गति और निरंतरता प्रदान कर सकती है। यदि कोई युवा किसी विशेष जीवनशैली, सामाजिक धारणा या सफलता के प्रतिरूप में रुचि दिखाता है, तो मंच उसी से संबंधित सामग्री की आवृत्ति बढ़ा सकता है। बार-बार दिखाई देने वाली सामग्री सामान्य, लोकप्रिय और सामाजिक रूप से मान्य प्रतीत होने लगती है। इस प्रकार कलन-विधीय दोहराव किसी विचार को प्रत्यक्ष आदेश दिए बिना वैचारिक परिचितता में बदल सकता है।

युवा पहचान और आत्म-धारणा का पुनर्गठन

युवा अवस्था में व्यक्ति "मैं कौन हूँ" और "मुझे कैसा होना चाहिए" जैसे प्रश्नों पर सक्रिय रूप से विचार करता है। सामाजिक संचार माध्यम पहले से ही आत्म-प्रस्तुति के मंच प्रदान करता था; कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने इस प्रक्रिया में संपादन, छँटाई-साधन, छवि निर्माण, लेखन-सहायता, परिचय-रूपरेखा सुझाव और व्यक्तिगत प्रतिक्रिया जैसी सुविधाएँ जोड़ दी हैं। इससे युवा अपनी पहचान के विभिन्न संस्करणों को प्रयोगात्मक रूप से प्रस्तुत कर सकता है। रचनात्मक दृष्टि से यह अभिव्यक्ति का विस्तार है, किंतु सामाजिक तुलना के स्तर पर यह दबाव भी बना सकता है क्योंकि अंकीय प्रस्तुति वास्तविक जीवन की तुलना में अधिक नियंत्रित और आदर्शीकृत होती है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता की एक नई भूमिका "परामर्शदाता-सदृश" संवाद में दिखाई देती है। युवा निजी प्रश्न, आत्म-संदेह, संबंधों की उलझन या जीविका से जुड़ी चिंताएँ संवादी संगणकीय सहायक से साझा कर सकता है। यंत्र की उपलब्धता, निरपेक्ष भाषा और तत्काल प्रतिक्रिया उसे सहज बना सकती है। परंतु इस सुविधा को वास्तविक मानवीय संबंधों का पूर्ण विकल्प मानना उचित नहीं है। वैचारिक विकास केवल सूचना प्राप्त करने से नहीं होता; असहमति, सहानुभूति, जिम्मेदारी, अनुभव और वास्तविक सामाजिक परिणाम भी व्यक्ति को परिपक्व बनाते हैं। यदि कृत्रिम बुद्धिमत्ता संवाद सामाजिक जटिलता को अत्यधिक सरल बना दे, तो युवा संबंधों के संघर्ष से मिलने वाली सीख से वंचित हो सकता है।

पहचान पर कलन-विधीय प्रभाव एकतरफा नहीं है। उपयोगकर्ता भी अपने चयन, पसंद-चिह्न, पटल-सरण, खोज और प्रतिपुष्टि के माध्यम से प्रणाली को "प्रशिक्षित" करता है। यह सह-निर्माण महत्वपूर्ण है। युवा कलन-विधि का निष्क्रिय शिकार नहीं है; वह मंच को संकेत देता है और कभी-कभी जानबूझकर अपनी सामग्री-प्रवाह बदलता है। इसलिए समाजशास्त्रीय विश्लेषण में स्वायत्त क्रियाशीलता और संरचना दोनों को साथ रखना चाहिए। वैचारिक स्वतंत्रता तभी बढ़ती है जब युवा यह जानता हो कि उसकी अंकीय क्रियाएँ भविष्य में उसे दिखाई देने वाली सामग्री को प्रभावित करती हैं।

शिक्षा, आलोचनात्मक चिंतन और ज्ञान-अनुशासन

शिक्षा के क्षेत्र में सृजनात्मक कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रभाव सबसे प्रत्यक्ष है। विद्यार्थी अवधारणाओं को सरल कर सकता है, अभ्यास प्रश्न बनवा सकता है, लेख की रूपरेखा तैयार कर सकता है, भाषा सुधार सकता है और व्यक्तिगत गति से सीख सकता है। विविध शैक्षिक पृष्ठभूमि वाले युवाओं के लिए यह आवश्यकतानुसार उपलब्ध सहायक शिक्षक की भूमिका निभा सकती है। संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन ने भी शिक्षा में सृजनात्मक कृत्रिम बुद्धिमत्ता की संभावनाओं को स्वीकार करते हुए मानव-केंद्रित और आयु-उपयुक्त उपयोग पर जोर दिया है। यदि शिक्षक इसका प्रयोग उत्तर तैयार कराने के बजाय प्रश्न निर्माण, तुलनात्मक विश्लेषण, उदाहरण खोजने और तर्क की समीक्षा के लिए सिखाएँ, तो यह सीखने की गुणवत्ता बढ़ा सकती है।

समस्या तब उत्पन्न होती है जब विद्यार्थी संज्ञानात्मक परिश्रम को लगातार आउटसोर्स करने लगे। किसी विचार को समझना, उसका तर्क बनाना, भाषा में व्यक्त करना और त्रुटियों को सुधारना सीखने की मूल प्रक्रियाएँ हैं। यदि विद्यार्थी केवल तैयार उत्तर जमा करता है, तो बाहरी रूप से उत्पादन बढ़ सकता है पर आंतरिक बौद्धिक क्षमता का विकास नहीं होता। इसी कारण कृत्रिम बुद्धिमत्ता युग में मूल्यांकन की पद्धति बदलने की आवश्यकता है। मौखिक विवेचन, प्रक्रिया-आधारित शैक्षणिक कार्य, स्रोत-परख, स्थानीय उदाहरण और व्यक्तिगत प्रतिबिंब जैसे साधन छात्र की वास्तविक समझ को अधिक विश्वसनीय ढंग से परख सकते हैं।

आलोचनात्मक चिंतन का अर्थ कृत्रिम बुद्धिमत्ता का विरोध करना नहीं, बल्कि उसके आउटपुट से प्रश्न पूछना है: यह निष्कर्ष किस आधार पर है? कौन-सा दृष्टिकोण अनुपस्थित है? क्या दिए गए तथ्य सत्यापित हैं? क्या भाषा में कोई पूर्वाग्रह है? क्या प्रश्न को अलग तरीके से पूछने पर उत्तर बदलता है? ऐसी प्रश्न-प्रक्रिया युवा को विचारों के उपभोक्ता से विश्लेषक बनाती है। इस प्रकार कृत्रिम बुद्धिमत्ता साक्षरता वैचारिक स्वायत्तता का शैक्षिक रूप बन सकती है।

सामाजिक संबंध, समूह और अंकीय समुदाय

युवाओं की वैचारिकी पर सहकर्मी समूह का प्रभाव लंबे समय से समाजशास्त्र का महत्वपूर्ण विषय रहा है। अंकीय मंच ने समूह की भौगोलिक सीमा समाप्त कर दी है। कोई युवा अपनी रुचि, पेशे, भाषा, कला, अंकीय खेल, साहित्य, परीक्षा, उद्यमिता या सामाजिक अनुभव से जुड़े समुदाय से तुरंत जुड़ सकता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता-आधारित अनुशंसा समान रुचि वाले समूहों तक पहुँच आसान बनाती है। इससे सामाजिक समर्थन, ज्ञान-साझेदारी और आत्मविश्वास बढ़ सकता है, विशेषकर तब जब स्थानीय

परिवेश में उस रुचि के लिए पर्याप्त अवसर न हों।

किन्तु अंकीय समुदायों की संरचना में समूह-समरूपता का जोखिम भी होता है। यदि उपयोगकर्ता लगातार समान दृष्टिकोण वाले लोगों से जुड़ा रहे, तो बाहरी समूह के प्रति समझ कम हो सकती है। इसके अतिरिक्त, तीव्र प्रसारित सामग्री प्रायः सूक्ष्म तर्क की तुलना में तीव्र भावनात्मक प्रतिक्रिया उत्पन्न करने वाले संदेशों को अधिक दृश्यता देती है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता-आधारित क्रम-निर्धारण का व्यावसायिक लक्ष्य उपयोगकर्ता की सहभागिता बढ़ाना हो सकता है, जबकि समाजशास्त्रीय रूप से अधिक सहभागिता सदैव बेहतर संवाद का संकेत नहीं है। इस अंतर को समझना आवश्यक है: किसी मंच के लिए अधिक सहभागिता सफलता हो सकती है, पर समाज के लिए संवाद की गुणवत्ता अधिक महत्वपूर्ण है।

आकांक्षा, जीविका और सफलता की नई परिभाषाएँ

कृत्रिम बुद्धिमत्ता युवाओं की आकांक्षाओं को दो परस्पर विरोधी दिशाओं में प्रभावित करती है। पहली दिशा अवसरों का विस्तार है। युवा नए कौशल सीख सकता है, जीवन-वृत्त सुधार सकता है, साक्षात्कार का अभ्यास कर सकता है, व्यावसायिक विचारों का प्रारंभिक परीक्षण कर सकता है और वैश्विक ज्ञान तक पहुँच सकता है। छोटे शहरों और सीमित संस्थागत संसाधनों वाले विद्यार्थियों के लिए यह विशेष रूप से उपयोगी हो सकता है। भारत कृत्रिम बुद्धिमत्ता अभियान का "भविष्य-कौशल" घटक इस परिवर्तन को औपचारिक कौशल नीति से जोड़ता है।

दूसरी दिशा भविष्य को लेकर अनिश्चितता है। स्वचालन और सृजनात्मक कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने कुछ कार्यों के स्वरूप को बदलने की संभावना बढ़ाई है। इसके कारण युवाओं में "कौन-सा कौशल टिकाऊ है" और "किस पेशे का भविष्य सुरक्षित है" जैसे प्रश्न प्रमुख हो रहे हैं। यह अनिश्चितता वैचारिकी में योग्यता, सृजनशीलता, उत्पादकता और रोजगार-योग्यता की नई परिभाषाएँ बना सकती है। अब केवल जानकारी याद रखना पर्याप्त नहीं माना जा रहा; समस्या-समाधान, मौलिकता, बहु-विषयी समझ, नैतिक निर्णय और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के साथ प्रभावी ढंग से कार्य करने की क्षमता महत्वपूर्ण होती जा रही है। इस बदलाव को अवसर में बदलने के लिए शिक्षा को मानवीय कौशल और तकनीकी कौशल के संतुलन पर बल देना होगा।

उपभोक्तावाद, जीवनशैली और अंकीय बाजार

कृत्रिम बुद्धिमत्ता-आधारित विज्ञापन प्रणालियाँ उपयोगकर्ता की पसंद का अनुमान लगाकर अत्यधिक लक्षित सामग्री प्रस्तुत करती हैं। युवाओं के लिए इसका अर्थ है कि वेश-भूषा, तकनीकी उपकरण, शिक्षा, यात्रा, शारीरिक स्वास्थ्य, सौंदर्य और जीवनशैली से जुड़ी सामग्री उनके व्यक्तिगत अंकीय व्यवहार के अनुरूप सामने आती है। सामाजिक तुलना और लक्षित विज्ञापन मिलकर ऐसी आकांक्षा बना सकते हैं जिसमें उपभोग सामाजिक पहचान का संकेत बन जाता है। विल्स्का तथा सहयोगियों का अध्ययन दिखाता है कि सामाजिक संचार माध्यम युवा उपभोक्ता पहचान के निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाते हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता इस प्रभाव को वैयक्तिकरण के माध्यम से अधिक सूक्ष्म बनाती है।

यहाँ वैचारिक प्रश्न यह है कि युवा सफलता और सुख को किन संकेतकों से जोड़ता है। यदि अंकीय सामग्री-प्रवाह बार-बार उपभोग-प्रधान छवियाँ प्रस्तुत करे, तो आर्थिक क्षमता से परे आकांक्षा और असंतोष दोनों बढ़ सकते हैं। दूसरी ओर वही अंकीय तंत्र कम लागत वाले शैक्षिक संसाधन, उद्यमिता, सेकंड-हैंड बाजार, वित्तीय साक्षरता और स्थानीय उत्पादों तक पहुँच भी उपलब्ध कराता है। इसलिए उपभोक्तावादी प्रभाव का विश्लेषण उपयोगकर्ता की आर्थिक स्थिति और अंकीय साक्षरता के संदर्भ में करना चाहिए।

भाषा, संस्कृति और स्थानीयता

भारत जैसे बहुभाषी समाज में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का सांस्कृतिक प्रभाव विशेष महत्व रखता है। अनुवाद, ध्वनि-आधारित अंतरापृष्ठ और भारतीय भाषाओं में सृजनात्मक कृत्रिम बुद्धिमत्ता की उपलब्धता उन युवाओं के लिए अवसर बढ़ाती है जो अंग्रेज़ी-केंद्रित अंकीय संसाधनों से पहले सीमित थे। भारतीय अंतरजाल एवं चलदूरभाष संघ-कांटार के 2024 संबंधी प्रतिवेदन में भारतीय भाषाओं में अंकीय सामग्री की व्यापक मांग दिखाई देती है। यह प्रवृत्ति ज्ञान के भाषाई लोकतंत्रीकरण की संभावना रखती है। यदि कृत्रिम बुद्धिमत्ता स्थानीय भाषाओं में गुणवत्तापूर्ण सामग्री उपलब्ध कराए, तो शिक्षा और सूचना में प्रवेश-बाधाएँ कम हो सकती हैं।

फिर भी भाषा केवल संचार का साधन नहीं; वह संस्कृति, अर्थ और अनुभव का वाहक है। यंत्र अनुवाद कभी-कभी स्थानीय मुहावरों, सामाजिक संदर्भ और सांस्कृतिक सूक्ष्मताओं को सपाट बना सकता है। यदि प्रशिक्षण आँकड़े में कुछ भाषाएँ और सामाजिक समूह अधिक प्रतिनिधित्व रखते हों, तो कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उत्तर उन्हीं की अवधारणाओं को "सामान्य" मान सकता है। इसलिए भारतीय युवाओं की वैचारिकी पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रभाव समझते समय स्थानीय ज्ञान, क्षेत्रीय भाषाओं और सांस्कृतिक विविधता की उपस्थिति की जाँच आवश्यक है। तकनीकी समावेशन का अर्थ केवल अंतरापृष्ठ का अनुवाद नहीं, बल्कि ज्ञान-प्रतिनिधित्व की विविधता भी है।

गलत सूचना, कृत्रिम रूप से निर्मित भ्रामक दृश्य-श्रव्य सामग्री और सत्य की सामाजिक समस्या

सृजनात्मक कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने पाठ, चित्र, ध्वनि और चलचित्र निर्माण को अत्यंत सरल कर दिया है। इसका सकारात्मक उपयोग रचनात्मकता, शिक्षा और सुलभ संचार में हो सकता है, पर इसी क्षमता से गलत या भ्रामक सामग्री भी बड़ी मात्रा में बनाई जा सकती है। कृत्रिम रूप से निर्मित भ्रामक दृश्य-श्रव्य सामग्री और कृत्रिम आवाज जैसी तकनीक दृश्य प्रमाण की पारंपरिक विश्वसनीयता को चुनौती देती है। युवा, जो सामाजिक संचार माध्यम से तेजी से सूचना ग्रहण करते हैं, उनके लिए "देखा इसलिए सत्य है" वाला मानदंड अब पर्याप्त नहीं है।

यह परिवर्तन वैचारिकी के स्तर पर गहरा है क्योंकि विश्वास सामाजिक जीवन का आधार है। यदि व्यक्ति लगातार इस संदेह में रहे कि कौन-सी सामग्री वास्तविक है, तो वह या तो अत्यधिक संशयवादी हो सकता है अथवा केवल अपने पसंदीदा स्रोत पर निर्भर हो सकता है। दोनों स्थितियाँ खुले विवेकपूर्ण संवाद को कमजोर कर सकती हैं। समाधान तकनीकी पहचान उपकरणों से आगे जाता है। स्रोत की प्रतिष्ठा, बहु-स्रोत सत्यापन, मूल संदर्भ की खोज, तिथि और स्थान की जाँच तथा भावनात्मक रूप से उत्तेजक सामग्री पर तुरंत प्रतिक्रिया न देना नई संचार माध्यम साक्षरता के आवश्यक व्यवहार हैं।

गोपनीयता, आँकड़े और निगरानी

कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रणालियाँ आँकड़ों पर आधारित होती हैं। उपयोगकर्ता का व्यवहार जितना अधिक अभिलेखित होता है, वैयक्तिकरण उतना अधिक सटीक हो सकता है। लेकिन युवा अक्सर सुविधा के बदले आँकड़े देने के दीर्घकालिक परिणामों से पूर्णतः परिचित नहीं होते। व्यक्तिगत रूपरेखा-निर्माण, लक्षित विज्ञापन, चेहरे की पहचान, स्थान-संकेत और संवाद इतिहास व्यक्ति के बारे में विस्तृत अंकीय रूपरेखा बना सकते हैं। ज़ुबॉफ़ ने "निगरानी पूँजीवाद" की चर्चा करते हुए दिखाया कि व्यवहार-संबंधी आँकड़े आर्थिक मूल्य में परिवर्तित किए जा सकते हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता इस आँकड़ा-आधारित अर्थव्यवस्था की क्षमता को और बढ़ाती है।

वैचारिक स्वायत्तता और गोपनीयता के बीच गहरा संबंध है। यदि व्यक्ति यह महसूस करे कि उसकी प्रत्येक गतिविधि देखी, दर्ज या विश्लेषित हो रही है, तो आत्म-अभिव्यक्ति और प्रयोग की स्वतंत्रता प्रभावित हो सकती है। युवा अवस्था में विचार बदलना, विभिन्न पहचान आजमाना और गलती करके सीखना स्वाभाविक है। स्थायी अंकीय अभिलेख इस लचीलेपन को सीमित कर सकता है। इसलिए आँकड़ों का न्यूनतम संग्रह, पारदर्शिता, आयु-उपयुक्त सहमति और उपयोगकर्ता नियंत्रण युवाओं के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं। संयुक्त राष्ट्र बाल कोष की बाल-केंद्रित कृत्रिम बुद्धिमत्ता मार्गदर्शिका भी सुरक्षा, गोपनीयता, निष्पक्षता और जवाबदेही को केंद्रीय आवश्यकता मानती है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता निर्भरता और मानवीय स्वायत्त क्रियाशीलता

किसी भी सुविधाजनक तकनीक के साथ निर्भरता की संभावना रहती है। सृजनात्मक कृत्रिम बुद्धिमत्ता की विशेषता यह है कि वह केवल उपकरण नहीं, संवादात्मक साथी जैसा अनुभव भी प्रदान कर सकती है। यदि युवा हर कठिन निर्णय, लेखन, विचार-विमर्श या भावनात्मक समस्या के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर निर्भर होने लगे, तो उसकी स्वयं प्रयास करने की प्रवृत्ति कम हो सकती है। यह प्रभाव सभी उपयोगकर्ताओं में समान नहीं होगा, पर शैक्षिक और सामाजिक संस्थाओं को इसकी संभावना पर ध्यान देना चाहिए।

स्वायत्त क्रियाशीलता का अर्थ तकनीक से दूरी बनाना नहीं, बल्कि उपयोग की शर्तें स्वयं तय करने की क्षमता है। एक सक्षम युवा कृत्रिम बुद्धिमत्ता से प्रारंभिक विकल्प प्राप्त कर सकता है, पर अंतिम निर्णय के लिए मानवीय अनुभव, प्रमाण और अपने मूल्य-बोध का उपयोग करता है। वह आवश्यकता पड़ने पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा दिया गया उत्तर को अस्वीकार कर सकता है, अलग स्रोतों से तुलना कर सकता है और यह जानता है कि सुविधा और सत्यता समान नहीं हैं। इस प्रकार वैचारिक स्वायत्तता कृत्रिम बुद्धिमत्ता-विरोध के बजाय विवेकपूर्ण सह-अस्तित्व से विकसित होती है।

अंकीय असमानता और कृत्रिम बुद्धिमत्ता विभाजन

अंकीय विभाजन की पहली पीढ़ी में प्रश्न था कि किसके पास अंतरजाल या उपकरण है। दूसरी पीढ़ी में कौशल और उपयोग की गुणवत्ता महत्वपूर्ण हुई। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के दौर में तीसरी परत उभर रही है: कौन-सा उपयोगकर्ता बेहतर प्रतिरूप, बेहतर भाषा समर्थन, विश्वसनीय आँकड़े, उच्च स्तरीय प्रशिक्षण और विशेषज्ञ मार्गदर्शन तक पहुँच सकता है। यदि कुछ युवा कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग शोध पत्र निर्माण, संगणकीय निर्देश-लेखन, अभिकल्पना और विश्लेषण के लिए करें जबकि अन्य केवल मनोरंजन या तैयार उत्तरों तक सीमित रहें, तो समान तकनीकी पहुँच के बावजूद सामाजिक परिणाम असमान हो सकते हैं।

ग्रामीण और छोटे शहरों के युवाओं के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता अवसर खोल सकती है क्योंकि विशेषज्ञ सहायता भौगोलिक दूरी से मुक्त हो सकती है। पर कमजोर संजाल, साझा उपकरण, भुगतान-आधारित सेवाएँ, भाषा-संबंधी सीमाएँ और अंकीय कौशल की कमी लाभ को सीमित कर सकती हैं। बूर्दियू के दृष्टिकोण से अंकीय और कृत्रिम बुद्धिमत्ता कौशल सांस्कृतिक पूँजी का रूप लेते हैं जो शैक्षिक और व्यावसायिक अवसरों में परिवर्तित हो सकती है। इस कारण सार्वजनिक नीति को केवल कृत्रिम बुद्धिमत्ता उपलब्ध कराने पर नहीं, बल्कि सार्थक उपयोग, स्थानीय भाषा संसाधन और आलोचनात्मक प्रशिक्षण पर ध्यान देना चाहिए।

लैंगिक और सामाजिक प्रतिनिधित्व

कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रशिक्षण आँकड़े समाज में मौजूद रूढ़ियों को प्रतिबिंबित कर सकता है। यदि आँकड़ों में कुछ पेशों, भूमिकाओं या सामाजिक समूहों के बारे में ऐतिहासिक पूर्वाग्रह मौजूद हों, तो प्रतिरूप के उत्तर भी उन धारणाओं को दोहरा सकते हैं। युवाओं की वैचारिकी पर इसका प्रभाव तब होता है जब तकनीकी आउटपुट तटस्थ अथवा वैज्ञानिक प्रतीत होता है। उदाहरण के लिए जीविका, नेतृत्व, सौंदर्य या परिवार की भूमिकाओं से जुड़ी रूढ़ियों का अनजाने पुनरुत्पादन सामाजिक धारणाओं को मजबूत कर सकता है।

उत्तरदायी कृत्रिम बुद्धिमत्ता के लिए निष्पक्षता केवल तकनीकी परीक्षण नहीं, सामाजिक प्रतिनिधित्व का प्रश्न है। विविध भाषाओं, क्षेत्रों, लिंग अनुभवों, वर्गों और सांस्कृतिक संदर्भों का पर्याप्त प्रतिनिधित्व आवश्यक है। साथ ही उपयोगकर्ता को यह समझना चाहिए कि प्रतिरूप का उत्तर सामाजिक सत्य का अंतिम मानक नहीं है। शैक्षिक संस्थानों में पूर्वाग्रह-पहचान अभ्यास, उदाहरणों की तुलना और स्थानीय अनुभवों के साथ कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा प्रस्तुत सामग्री की समीक्षा युवाओं में आलोचनात्मक संवेदनशीलता विकसित कर सकती है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता साक्षरता: वैचारिक सुरक्षा का केंद्रीय साधन

अंकीय साक्षरता का पारंपरिक अर्थ उपकरण चलाना, खोज करना और अंतरजाल-आधारित सुरक्षा समझना था। कृत्रिम बुद्धिमत्ता युग में इसमें नए कौशल जोड़ने होंगे। पहला, उपयोगकर्ता को कृत्रिम बुद्धिमत्ता की बुनियादी कार्यप्रणाली का सहज ज्ञान होना चाहिए कि प्रतिरूप आँकड़ों से पैटर्न सीखता है और संभाव्य उत्तर उत्पन्न करता है। दूसरा, उसे स्रोत सत्यापन, पूर्वाग्रह की पहचान और गलत उत्तर की संभावना समझनी चाहिए। तीसरा, उसे अच्छा प्रश्न बनाना, संदर्भ देना और आउटपुट की आलोचना करना आना चाहिए। चौथा, गोपनीय और संवेदनशील आँकड़े साझा करने की सीमाएँ स्पष्ट होनी चाहिए। पाँचवाँ, उसे यह पहचानना चाहिए कि कब मानवीय विशेषज्ञ, शिक्षक, परामर्शदाता या वास्तविक सामाजिक संवाद की आवश्यकता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता साक्षरता का उद्देश्य युवाओं को केवल उत्पादक उपयोगकर्ता बनाना नहीं, बल्कि जिम्मेदार नागरिक और स्वतंत्र विचारक बनाना होना चाहिए। यदि कौशल प्रशिक्षण का केंद्र केवल "तेजी से काम कैसे करें" रहे, तो दक्षता बढ़ेगी किंतु वैचारिक स्वायत्तता आवश्यक रूप से नहीं। इसके विपरीत, यदि प्रशिक्षण में नैतिक प्रश्न, आँकड़े शक्ति, मंच हित, सामाजिक प्रभाव और बहु-दृष्टिकोण शामिल हों, तो युवा तकनीक को सामाजिक संदर्भ में समझ सकेंगे। यही समाजशास्त्रीय कृत्रिम बुद्धिमत्ता साक्षरता है।

भारतीय संदर्भ में नीति और संस्थागत दिशा

भारत में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का विस्तार विशाल युवा आबादी, बहुभाषिकता और तेजी से बढ़ते अंकीय बाजार के कारण विशेष सामाजिक महत्व रखता है। भारत कृत्रिम बुद्धिमत्ता अभियान ने संगणन क्षमता, नवाचार, आँकड़ा-मंच, अनुप्रयोग-विकास, भविष्य-कौशल, नवउद्यम समर्थन और सुरक्षित एवं विश्वसनीय कृत्रिम बुद्धिमत्ता को नीति के प्रमुख आयामों में रखा है। इससे संकेत मिलता है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता केवल निजी क्षेत्र का तकनीकी मुद्दा नहीं, बल्कि राष्ट्रीय कौशल और सामाजिक विकास से जुड़ा विषय है। युवाओं की वैचारिकी पर प्रभाव की दृष्टि से सुरक्षित एवं विश्वसनीय कृत्रिम बुद्धिमत्ता का आयाम विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि तकनीक में विश्वास तभी टिकाऊ होगा जब पारदर्शिता, जवाबदेही और अधिकार-सुरक्षा सुनिश्चित हो।

उच्च शिक्षा संस्थानों के सामने दोहरी जिम्मेदारी है। एक ओर उन्हें विद्यार्थियों को कृत्रिम बुद्धिमत्ता से दूर रखने की अव्यावहारिक नीति से बचना चाहिए; दूसरी ओर बिना नियम के उपयोग को भी सामान्य नहीं मानना चाहिए। पाठ्यक्रम में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग के स्पष्ट मानक, उद्धरण और घोषणा की शैक्षणिक नीति, आँकड़ों की गोपनीयता, स्रोत सत्यापन और विषय-विशेष नैतिकता शामिल की जा सकती है। शिक्षकों को भी प्रशिक्षण आवश्यक है ताकि वे कृत्रिम बुद्धिमत्ता को नकल के पर्याय के रूप में देखने के बजाय सीखने की प्रक्रिया में नियंत्रित सहयोगी बना सकें।

परिवार और समुदाय का योगदान भी महत्वपूर्ण है। युवा अंकीय व्यवहार पर केवल प्रतिबंध लगाने से आलोचनात्मक क्षमता विकसित नहीं होती। परिवार में खुले संवाद, अंतरजाल-आधारित अनुभव पर चर्चा और गोपनीयता के व्यवहारिक नियम अधिक उपयोगी हैं। स्थानीय भाषा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता जागरूकता सामग्री और सामुदायिक अंकीय साक्षरता कार्यक्रम छोटे शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों में विशेष प्रभावी हो सकते हैं।

समाजशास्त्रीय विश्लेषण

युवा वैचारिकी पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रभाव को केवल "तकनीक के उपयोग" के रूप में समझना समाजशास्त्रीय दृष्टि से पर्याप्त नहीं है। यह प्रभाव समाजीकरण, शक्ति, सांस्कृतिक पूँजी, पहचान, सामाजिक स्तरीकरण और ज्ञानात्मक प्रामाणिकता की प्रक्रियाओं से जुड़ा है। बर्जर और लकमैन की सामाजिक वास्तविकता के निर्माण संबंधी दृष्टि के अनुसार व्यक्ति जिस जगत को स्वाभाविक मानता है, वह निरंतर सामाजिक अंतःक्रिया से निर्मित होता है। अंकीय परिवेश में इस अंतःक्रिया का एक भाग अब कृत्रिम बुद्धिमत्ता-आधारित प्रणालियों के माध्यम से घटित होता है। जब कोई युवा बार-बार किसी विशेष प्रकार की व्याख्या, अनुशंसा या भाषा-शैली से परिचित होता है, तो वह केवल सूचना प्राप्त नहीं कर रहा होता; वह सामाजिक वास्तविकता को वर्गीकृत करने की एक पद्धति भी सीख रहा होता है। इस स्तर पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रत्यक्ष शिक्षक न होते हुए भी अप्रत्यक्ष समाजीकरणकारी माध्यम का कार्य कर सकती है।

संरचना और स्वायत्त क्रियाशीलता का संबंध इस प्रभाव का दूसरा महत्त्वपूर्ण पक्ष है। मंचों की कलन-विधियाँ दृश्यता, क्रम और अनुशंसा को नियंत्रित करती हैं, किंतु युवा भी अपने चयन, खोज, प्रतिक्रिया और अस्वीकार के माध्यम से उस अंकीय परिवेश को प्रभावित करते हैं। इसीलिए युवा को केवल तकनीकी प्रभाव का निष्क्रिय प्राप्तकर्ता मानना उचित नहीं है। समाजशास्त्रीय रूप से यहाँ "सह-निर्माण" की प्रक्रिया दिखाई देती है, जिसमें प्रणाली उपयोगकर्ता के व्यवहार से सीखती है और उपयोगकर्ता प्रणाली द्वारा प्रस्तुत विकल्पों के बीच निर्णय करता है। समस्या तब उत्पन्न होती है जब विकल्पों का प्रारंभिक ढाँचा इतना संकीर्ण हो कि उपयोगकर्ता को वैकल्पिक दृष्टिकोण दिखाई ही न दें। अतः वैचारिक स्वायत्तता का प्रश्न केवल व्यक्तिगत विवेक का नहीं, बल्कि उपलब्ध विकल्पों की सामाजिक और तकनीकी संरचना का भी है।

बूर्दियू के सांस्कृतिक पूँजी संबंधी दृष्टिकोण से कृत्रिम बुद्धिमत्ता साक्षरता नई असमानताओं को समझने का उपयोगी आधार प्रस्तुत करती है। समान उपकरण तक पहुँच रखने वाले दो युवाओं को समान लाभ आवश्यक रूप से प्राप्त नहीं होगा। उच्च गुणवत्ता की शिक्षा, भाषा पर अधिकार, स्रोत-परख, विषयगत ज्ञान और प्रशिक्षित शिक्षक का मार्गदर्शन रखने वाला युवा कृत्रिम बुद्धिमत्ता से प्राप्त सामग्री का मूल्यांकन कर सकता है; इसके विपरीत सीमित संसाधनों वाला युवा उसी सामग्री को अंतिम सत्य मान सकता है। इस प्रकार तकनीक तक पहुँच की समानता, उपयोग की समानता नहीं है। ग्रामीण-शहरी अंतर, आर्थिक स्थिति, भाषा, शैक्षिक संस्थान की गुणवत्ता और परिवार की सांस्कृतिक पूँजी मिलकर यह निर्धारित करते हैं कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता अवसर बनेगी या निर्भरता। इसलिए नया अंकीय विभाजन उपकरण-स्वामित्व से आगे बढ़कर विवेकपूर्ण उपयोग की क्षमता में दिखाई देता है।

युवा पहचान के स्तर पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भूमिका प्रतीकात्मक अंतःक्रिया की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है। युवा अपने बारे में दूसरों की संभावित प्रतिक्रिया, स्वीकृति और तुलना के आधार पर आत्म-छवि निर्मित करता है। अंकीय मंच इस प्रक्रिया को मापनीय संकेतों, दृश्यता और अनुशंसित सामग्री से तीव्र बनाते हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा संपादित छवियाँ, भाषा-सुझाव, वैयक्तिकृत सामग्री और संवादात्मक प्रतिक्रिया आत्म-प्रस्तुति को अधिक नियंत्रित बना सकती हैं। इससे अभिव्यक्ति के नए अवसर उत्पन्न होते हैं, पर साथ ही आदर्शीकृत जीवन, सौंदर्य, सफलता और लोकप्रियता की मानक छवियाँ भी सुदृढ़ हो सकती हैं। समाजशास्त्रीय चिंता इस बात की है कि स्वीकृति का आधार वास्तविक सामाजिक संबंधों से हटकर मापित अंकीय प्रतिक्रिया पर अत्यधिक निर्भर न हो जाए, क्योंकि ऐसी स्थिति आत्म-मूल्यांकन को बाहरी तकनीकी संकेतों से बाँध सकती है।

ज्ञान और शक्ति का संबंध भी केंद्रीय है। कैस्टेल्स की संजाल समाज की अवधारणा बताती है कि संचार-संजाल में प्रवाह पर नियंत्रण स्वयं शक्ति का स्रोत है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता-आधारित चयन प्रणालियाँ यह निर्धारित करने में भूमिका निभाती हैं कि कौन-सी सूचना पहले दिखाई दे, कौन-सी सामग्री अधिक फैल सके और किन विषयों को कम दृश्यता मिले। इससे पारंपरिक द्वारपालों के साथ नए कलन-विधीय द्वारपाल उभरते हैं। स्वार्ट के अध्ययन से यह भी संकेत मिलता है कि युवा अक्सर अनुशंसा प्रणालियों की उपस्थिति का अनुभव करते हैं, पर उनके संचालन को पूर्णतः स्पष्ट नहीं कर पाते। अतः वैचारिक स्वायत्तता के लिए केवल सूचना की उपलब्धता पर्याप्त नहीं; चयन-प्रक्रिया की समझ भी आवश्यक है। यही कारण है कि स्रोत-सत्यापन, विरोधी दृष्टिकोण की खोज और अनुशंसा की सीमाओं का ज्ञान लोकतांत्रिक तथा आलोचनात्मक नागरिकता के लिए महत्त्वपूर्ण बनता है।

निगरानी और आँकड़ा-संग्रह की प्रक्रिया युवा व्यवहार पर अप्रत्यक्ष अनुशासन भी उत्पन्न कर सकती है। ज़ुबॉफ़ द्वारा वर्णित निगरानी पूँजीवाद की दृष्टि से व्यवहार-संबंधी

आँकड़ों का संग्रह आर्थिक और पूर्वानुमानात्मक मूल्य रखता है। यदि युवा यह मानने लगे कि उसकी खोज, संवाद और पसंद निरंतर दर्ज हो रही है, तो वह अपनी अभिव्यक्ति को स्वयं सीमित कर सकता है। समाजशास्त्रीय रूप से इसे आत्म-अनुशासन की ऐसी अवस्था के रूप में देखा जा सकता है जिसमें बाहरी नियंत्रण प्रत्यक्ष आदेश के बजाय संभावित निगरानी की अनुभूति से कार्य करता है। युवा अवस्था में प्रयोग, असहमति और विचार-परिवर्तन व्यक्तित्व विकास के स्वाभाविक हिस्से हैं; इसलिए स्थायी अंकीय अभिलेख और अत्यधिक व्यक्तिगत रूपरेखा-निर्माण वैचारिक प्रयोगशीलता को प्रभावित कर सकते हैं।

समग्र रूप से समाजशास्त्रीय विश्लेषण यह दर्शाता है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रभाव तकनीकी नियतिवाद से नहीं समझा जा सकता। वही प्रणाली अलग वर्ग, भाषा, क्षेत्र, लिंग, शैक्षिक स्तर और संस्थागत परिवेश में भिन्न परिणाम उत्पन्न कर सकती है। संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन मानव-केंद्रित, आयु-उपयुक्त और नैतिक उपयोग पर बल देता है, जबकि संयुक्त राष्ट्र बाल कोष की 2025 की मार्गदर्शिका सुरक्षा, गोपनीयता, निष्पक्षता, पारदर्शिता, मानव पर्यवेक्षण और बच्चों-युवाओं की भागीदारी को केंद्रीय मानती है। इन आधारों पर कहा जा सकता है कि युवा वैचारिकी की दिशा तकनीक अकेले तय नहीं करती; परिवार, शिक्षा, सहकर्मी समूह, सामाजिक असमानताएँ, संस्थागत नियम और स्वयं युवा की आलोचनात्मक क्षमता मिलकर प्रभाव को आकार देते हैं। इसलिए समाजशास्त्रीय समाधान भी बहुस्तरीय होना चाहिए—व्यक्ति को साक्षर बनाना, संस्थाओं को उत्तरदायी करना और तकनीकी संरचनाओं में पारदर्शिता तथा सामाजिक न्याय को मजबूत करना।

चर्चा

उपलब्ध साहित्य और समाजशास्त्रीय सिद्धांतों का समेकित विश्लेषण यह दर्शाता है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता युवाओं की वैचारिकी को सीधे बदल देने वाली एकल शक्ति नहीं है। उसका प्रभाव मंच अभिकल्पना, उपयोगकर्ता की सामाजिक पृष्ठभूमि, अंकीय एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता साक्षरता, संस्थागत मार्गदर्शन और उपयोग की प्रेरणा से मध्यस्थित होता है। समान तकनीक अलग सामाजिक संदर्भों में अलग परिणाम उत्पन्न कर सकती है। प्रशिक्षित शिक्षक के साथ कृत्रिम बुद्धिमत्ता एक प्रभावी शैक्षिक सहयोगी बन सकती है, जबकि बिना मार्गदर्शन के वही उपकरण तैयार उत्तरों पर निर्भरता पैदा कर सकता है। इसी प्रकार बहुभाषी प्रतिरूप स्थानीय ज्ञान को सुलभ बना सकता है, पर अपर्याप्त प्रशिक्षण आँकड़े गलत या पूर्वाग्रहपूर्ण सामग्री भी दे सकता है। इसलिए तकनीकी नियतिवाद से बचते हुए कृत्रिम बुद्धिमत्ता को सामाजिक संस्थाओं के साथ अंतःक्रिया करने वाली व्यवस्था के रूप में देखना अधिक उपयुक्त है।

युवा स्वायत्त क्रियाशीलता को केंद्र में रखना भी आवश्यक है। युवा केवल कलन-विधीय प्रभाव के निष्क्रिय प्राप्तकर्ता नहीं हैं; वे अपनी सामग्री-प्रवाह बदलते हैं, विभिन्न स्रोतों की तुलना करते हैं, कृत्रिम बुद्धिमत्ता से प्रतिवाद मांगते हैं और उपयोग के नियम स्वयं विकसित कर सकते हैं। समाजशास्त्रीय रूप से सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन ज्ञान की प्राधिकार-व्यवस्था में है, क्योंकि शिक्षक, पुस्तक, मित्र और परिवार के साथ अब एक तेज, सहज और आत्मविश्वासपूर्ण "यंत्र-स्वर" भी परामर्श का स्रोत बन गई है। इस नई प्राधिकार-व्यवस्था में शिक्षा का मूल प्रश्न केवल "क्या जानना है" नहीं, बल्कि "किस आधार पर जानना है कि कोई दावा विश्वसनीय है" बन जाता है। पारदर्शिता, स्रोत-परख और आलोचनात्मक प्रश्नशीलता इसी कारण युवा वैचारिक स्वायत्तता की केंद्रीय शर्तें हैं।

प्रमुख निष्कर्ष

1. कृत्रिम बुद्धिमत्ता युवाओं की वैचारिकी को प्रत्यक्ष आदेश के माध्यम से नहीं, बल्कि सूचना चयन, भाषा, दृश्यता, वैयक्तिकरण और संवाद की संरचना के माध्यम से प्रभावित करती है।

2. कृत्रिम बुद्धिमत्ता से ज्ञान तक पहुँच, अनुवाद, व्यक्तिगत अधिगम और रचनात्मकता के अवसर बढ़ते हैं, विशेषकर संसाधन-सीमित युवाओं के लिए।

3. सृजनात्मक कृत्रिम बुद्धिमत्ता की सहज भाषा तथ्यात्मक विश्वसनीयता का भ्रम उत्पन्न कर सकती है; इसलिए स्रोत सत्यापन वैचारिक स्वायत्तता के लिए आवश्यक है।

4. अनुशंसा प्रणालियाँ मानवीय पुष्टिकरण पूर्वाग्रह को तकनीकी रूप से सुदृढ़ कर सकती हैं, हालांकि विविध सामग्री की खोज का अवसर भी प्रदान करती हैं।

5. युवा पहचान अब मानवीय समूहों और अंकीय कलन-विधि के सह-निर्माण से प्रभावित हो रही है; उपयोगकर्ता स्वयं भी अपने अंकीय परिवेश को संकेत देता है।

6. शिक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रभाव उपयोग पद्धति पर निर्भर है: प्रक्रिया-आधारित उपयोग सीखने को मजबूत कर सकता है, जबकि तैयार उत्तरों पर निर्भरता आलोचनात्मक क्षमता को कमजोर कर सकती है।

7. कृत्रिम बुद्धिमत्ता साक्षरता एक नई सांस्कृतिक पूँजी के रूप में उभर रही है और उसके असमान वितरण से नया अंकीय विभाजन उत्पन्न हो सकता है।

8. गोपनीयता, पूर्वाग्रह, गलत सूचना, कृत्रिम रूप से निर्मित भ्रामक दृश्य-श्रव्य सामग्री और आँकड़ा-आधारित व्यक्तिगत रूपरेखा-निर्माण युवा वैचारिकी और सामाजिक विश्वास के लिए महत्वपूर्ण चुनौतियाँ हैं।

9. भारतीय संदर्भ में बहुभाषी कृत्रिम बुद्धिमत्ता ज्ञान-विस्तार का बड़ा अवसर है, पर स्थानीय संस्कृति और भाषाई विविधता का पर्याप्त प्रतिनिधित्व आवश्यक है।

10. कृत्रिम बुद्धिमत्ता का समग्र प्रभाव न तो स्वभावतः सकारात्मक है, न नकारात्मक; वह तकनीकी अभिकल्पना, सामाजिक संरचना, उपयोगकर्ता की स्वायत्त क्रियाशीलता और संस्थागत शासन की अंतःक्रिया पर निर्भर है।

सुझाव

1. विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता साक्षरता को सामान्य अंकीय कौशल से अलग स्पष्ट अध्ययन-इकाई के रूप में विकसित किया जाए, जिसमें स्रोत-परख, प्रतिरूप की सीमाएँ, आँकड़ों की गोपनीयता और पूर्वाग्रह शामिल हों।

2. शिक्षकों को विषय-विशेष कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग का प्रशिक्षण दिया जाए ताकि विद्यार्थी केवल तैयार उत्तर न लें बल्कि तुलना, आलोचना, उदाहरण और शोध पत्र निर्माण-प्रक्रिया में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग करें।

3. शैक्षणिक कार्य और परीक्षा में प्रक्रिया, मौखिक विवेचन, स्थानीय उदाहरण और स्रोत-सत्यापन को अधिक महत्व दिया जाए।

4. युवाओं को निजी, संवेदनशील और पहचान-संबंधी जानकारी कृत्रिम बुद्धिमत्ता मंच पर साझा करने से जुड़े जोखिम स्पष्ट रूप से बताए जाएँ।

5. मंच और कृत्रिम बुद्धिमत्ता सेवाओं में उपयोगकर्ता को अनुशंसा, वैयक्तिकरण और आँकड़ों के उपयोग पर अधिक पारदर्शी नियंत्रण दिया जाए।

6. भारतीय भाषाओं और स्थानीय ज्ञान से संबंधित उच्च गुणवत्ता वाले सार्वजनिक अंकीय संसाधन विकसित किए जाएँ ताकि कृत्रिम बुद्धिमत्ता का लाभ भाषाई रूप से अधिक समावेशी हो।

7. ग्रामीण एवं संसाधन-सीमित संस्थानों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रशिक्षण, उपकरण पहुँच और शिक्षक समर्थन के लिए विशेष कार्यक्रम चलाए जाएँ ताकि नया कृत्रिम बुद्धिमत्ता विभाजन न बढ़े।

8. गलत सूचना और कृत्रिम रूप से निर्मित भ्रामक दृश्य-श्रव्य सामग्री पहचान को संचार माध्यम साक्षरता का नियमित हिस्सा बनाया जाए; विद्यार्थियों को बहु-स्रोत सत्यापन की व्यवहारिक अभ्यास गतिविधियाँ दी जाएँ।

9. परिवारों को प्रतिबंध-आधारित दृष्टिकोण के बजाय संवाद-आधारित अंकीय मार्गदर्शन अपनाने के लिए जागरूक किया जाए।

10. युवाओं पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता के दीर्घकालिक प्रभावों को समझने के लिए भारतीय सामाजिक संदर्भ में, विशेषकर छोटे शहरों, ग्रामीण क्षेत्रों और विविध भाषाई समूहों पर, अधिक प्राथमिक क्षेत्रीय शोध पत्र तैयार किए जाएँ।

शोध पत्र की सीमाएँ

यह शोध पत्र मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों और अवधारणात्मक विश्लेषण पर आधारित है। इसलिए इसमें किसी विशिष्ट क्षेत्र के युवाओं पर प्रत्यक्ष सांख्यिकीय कारण-परिणाम स्थापित नहीं किया गया है। उपलब्ध अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रों के सामाजिक संदर्भ भारत से भिन्न हो सकते हैं; अतः उनके निष्कर्षों को यांत्रिक रूप से भारतीय युवाओं पर लागू नहीं किया जाना चाहिए। कृत्रिम बुद्धिमत्ता तकनीक बहुत तेजी से बदल रही है, इसलिए किसी विशेष प्रतिरूप या मंच से संबंधित निष्कर्ष समय के साथ परिवर्तित हो सकते हैं। साथ ही "वैचारिकी" व्यापक अवधारणा है, जिसे भविष्य के अनुभवजन्य शोध पत्रों में स्पष्ट मापनीय आयामों में विभाजित करना आवश्यक होगा। इन सीमाओं के बावजूद अध्ययन का विश्लेषण उन प्रमुख प्रक्रियाओं की पहचान करता है जिन्हें आगे के सर्वेक्षण, साक्षात्कार और क्षेत्रीय अध्ययन में परीक्षण किया जा सकता है।

निष्कर्ष

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और युवा वैचारिकी का संबंध समकालीन समाजशास्त्र के लिए इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह तकनीक सूचना प्राप्त करने की प्रक्रिया तक सीमित नहीं रहती, बल्कि ज्ञान की वैधता, सामाजिक पहचान, आकांक्षाओं, संबंधों और निर्णय की परिस्थितियों को भी पुनर्गठित करती है। युवा जीवन का वह चरण है जिसमें व्यक्ति अपने मूल्यों, भूमिकाओं, भविष्य की दिशा और सामाजिक स्थान के बारे में अपेक्षाकृत तीव्रता से विचार करता है। ऐसे समय में अंकीय माध्यमों से प्राप्त बारंबार संदेश, अनुशंसाएँ और संवाद व्यक्ति की प्राथमिकताओं को आकार देने में सहायक हो सकते हैं। इस शोध पत्र का विश्लेषण बताता है कि प्रभाव प्रत्यक्ष आदेश के रूप में कम और सूचना के चयन, प्रस्तुति, पुनरावृत्ति, वैयक्तिकरण तथा सामाजिक मान्यता की संरचना के माध्यम से अधिक कार्य करता है।

ज्ञान के क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने युवाओं के लिए उल्लेखनीय संभावनाएँ उत्पन्न की हैं। कठिन विषयों की सरल व्याख्या, अनेक भाषाओं के बीच रूपांतरण, अभ्यास-सामग्री की उपलब्धता और व्यक्तिगत गति से सीखने की सुविधा ज्ञान तक पहुँच की बाधाएँ घटा सकती है। फिर भी सहज और आत्मविश्वासपूर्ण भाषा सत्य का स्वतः प्रमाण नहीं होती। यदि स्रोत-परख, प्रमाण की जाँच और वैकल्पिक दृष्टिकोणों की तुलना की आदत कमजोर पड़ती है, तो सुविधा ज्ञानात्मक निर्भरता में बदल सकती है। इसलिए भविष्य की शिक्षा का उद्देश्य केवल कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग सिखाना नहीं, बल्कि उसके उत्तर से प्रश्न पूछना, उसके आधार को जाँचना और आवश्यक होने पर उसे अस्वीकार करना भी होना चाहिए।

पहचान और सामाजिक संबंधों के संदर्भ में यह तकनीक अवसर और दबाव दोनों उत्पन्न करती है। युवा अपनी अभिव्यक्ति को बेहतर रूप दे सकता है, नए समुदायों तक पहुँच सकता है और स्थानीय सीमाओं से बाहर समान रुचि वाले लोगों से जुड़ सकता है। दूसरी ओर वैयक्तिकृत सामग्री, आदर्शीकृत जीवन-छवियाँ और निरंतर सामाजिक तुलना सफलता, सौंदर्य, उपभोग और लोकप्रियता के संकीर्ण मानक भी बना सकती हैं। इस कारण युवा वैचारिकी को समझते समय मानवीय संबंधों की गुणवत्ता, वास्तविक समुदायों से जुड़ाव, असहमति को स्वीकार करने की क्षमता और सहानुभूतिपूर्ण संवाद को तकनीकी सुविधा के समान महत्त्व देना आवश्यक है।

सामाजिक असमानता इस पूरे प्रश्न का निर्णायक आयाम है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता का लाभ उन युवाओं को अधिक मिल सकता है जिनके पास गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, भाषा-कौशल, विश्वसनीय मार्गदर्शन, उपयुक्त उपकरण और स्रोतों की जाँच करने की क्षमता है। सीमित संसाधनों वाले युवाओं के लिए वही तकनीक ज्ञान तक पहुँच का साधन भी बन सकती है और बिना सत्यापन के तैयार सामग्री पर निर्भरता का कारण भी। अतः समावेशन का अर्थ केवल तकनीक उपलब्ध कराना नहीं है; स्थानीय भाषाओं में गुणवत्तापूर्ण सामग्री, शिक्षक-प्रशिक्षण, सार्वजनिक अंकीय अवसंरचना, ग्रामीण और छोटे शहरों में कौशल-विकास तथा आलोचनात्मक साक्षरता को समान रूप से विकसित करना होगा।

गोपनीयता, आँकड़ा-संग्रह और कलन-विधीय पारदर्शिता से जुड़े प्रश्न युवा वैचारिक स्वायत्तता के लिए विशेष महत्व रखते हैं। व्यक्ति के व्यवहार का अत्यधिक अभिलेखन उसके बारे में विस्तृत अनुमान बनाने की क्षमता प्रदान करता है और लक्षित सामग्री को अधिक सूक्ष्म बनाता है। यदि उपयोगकर्ता को यह न पता हो कि उसकी जानकारी

किस उद्देश्य से संग्रहीत, विश्लेषित या प्रयुक्त हो रही है, तो स्वतंत्र निर्णय की परिस्थिति असंतुलित हो सकती है। इसलिए आयु-उपयुक्त सहमति, आँकड़ों का न्यूनतम संग्रह, स्पष्ट सूचना, मानव पर्यवेक्षण और शिकायत-निवारण जैसी व्यवस्थाएँ केवल तकनीकी प्रशासन का विषय नहीं, बल्कि नागरिक अधिकार और सामाजिक न्याय का प्रश्न हैं।

शैक्षिक संस्थानों, परिवारों और सार्वजनिक नीति की भूमिका इस संतुलन को मजबूत करने में केंद्रीय है। प्रतिबंध-प्रधान दृष्टिकोण युवाओं को तकनीक से दूर रखने में सफल नहीं होगा, जबकि पूर्णतः अनियंत्रित उपयोग बौद्धिक निर्भरता और जोखिम बढ़ा सकता है। बेहतर दिशा वह है जिसमें विद्यार्थी कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग विचार-विस्तार, तुलना, अभ्यास और प्रारंभिक सहायता के लिए करें, पर अंतिम तर्क, उत्तरदायित्व और निर्णय स्वयं ग्रहण करें। परिवार में खुले संवाद, संस्थानों में स्पष्ट उपयोग-मानक और समाज में बहुभाषी जागरूकता से ऐसी संस्कृतिगत परिस्थिति बन सकती है जिसमें तकनीकी दक्षता और मानवीय विवेक एक-दूसरे के पूरक बनें।

अंततः यह शोध पत्र इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता युवाओं की वैचारिकी को एक दिशा में यांत्रिक रूप से नहीं बदलती। उसका प्रभाव सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक पूँजी, अंकीय वातावरण, संस्थागत समर्थन और युवा की स्वयं की आलोचनात्मक क्षमता के बीच अंतःक्रिया से निर्मित होता है। इसीलिए लक्ष्य तकनीक से दूरी बनाना नहीं, बल्कि ऐसी वैचारिक स्वायत्तता विकसित करना होना चाहिए जिसमें युवा सुविधा का लाभ लेते हुए प्रमाण, नैतिकता, विविध दृष्टिकोण, गोपनीयता और सामाजिक उत्तरदायित्व को बनाए रखें। यदि शिक्षा और नीति इस संतुलित दृष्टिकोण को आधार बनाती हैं, तो कृत्रिम बुद्धिमत्ता केवल दक्षता बढ़ाने वाला साधन नहीं, बल्कि ज्ञान तक अधिक न्यायपूर्ण पहुँच, भाषाई समावेशन और विचारशील नागरिकता को समर्थन देने वाला माध्यम भी बन सकती है।

संदर्भ सूची

बर्जर, पी. एल. एवं लकमैन, टी. (1966). वास्तविकता का सामाजिक निर्माण। एंकर प्रकाशन।

बूर्दियू, पी. (1984). भेद: रुचि-निर्णय की सामाजिक आलोचना। हार्वर्ड विश्वविद्यालय प्रकाशन।

बुकर, टी. (2018). यदि...तो: कलन-विधीय शक्ति और राजनीति। ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय प्रकाशन।

कैस्टेल्स, एम. (1996). संजाल समाज का उदय। ब्लैकवेल प्रकाशन।

गिडेन्स, ए. (1991). आधुनिकता और आत्म-पहचान: उत्तर-आधुनिक युग में स्व और समाज। स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय प्रकाशन।

गिलेस्पी, टी. (2018). अंतरजाल के संरक्षक। येल विश्वविद्यालय प्रकाशन।

भारतीय अंतरजाल एवं चलदूरभाष संघ तथा कांटार। (2025). भारत में अंतरजाल 2024। भारतीय अंतरजाल एवं चलदूरभाष संघ।

इलेक्ट्रॉनिकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार। (2024). भारत कृत्रिम बुद्धिमत्ता अभियान।

इलेक्ट्रॉनिकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार। (2026). भारत कृत्रिम बुद्धिमत्ता अभियान प्रतिवेदन 2026।

मुन्योस-रोद्रिगेज, जे. एम., पातिन्यो अलोंसो, सी., पेसोआ, टी. एवं मार्तिन-लुकास, जे. (2023). अंतरजाल पर जोखिम का अनुभव करने वाले युवाओं की पहचान-रूपरेखा: निर्णय-वृक्ष आधारित आँकड़ा-विश्लेषण का अनुप्रयोग। संगणक एवं शिक्षा, 197, 104743।

स्वार्ट, जे. (2021). कलन-विधियों का अनुभव: युवा सामाजिक संचार माध्यमों पर कलन-विधीय समाचार चयन को कैसे समझते, अनुभव करते और उससे जुड़ते हैं। सामाजिक संचार माध्यम एवं समाज, 7(2)।

संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन। (2023). शिक्षा और अनुसंधान में सृजनात्मक कृत्रिम बुद्धिमत्ता के लिए मार्गदर्शिका। पेरिस: संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन।

संयुक्त राष्ट्र बाल कोष। (2025). कृत्रिम बुद्धिमत्ता और बच्चों के संबंध में मार्गदर्शिका, संस्करण 3.0। अनुसंधान एवं पूर्वानुमान कार्यालय, फ्लोरेंस।

संयुक्त राष्ट्र बाल कोष, भारत। (2025). बच्चों और युवाओं के लिए उत्तरदायी कृत्रिम बुद्धिमत्ता: बाल अधिकारों की रक्षा करने वाली नीतियों और प्रणालियों के लिए अनुशंसाएँ।

वान डाइक, जे., पोएल, टी. एवं डी वाल, एम. (2018). मंच समाज: परस्पर संबद्ध विश्व में सार्वजनिक मूल्य। ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय प्रकाशन।

विल्स्का, टी.-ए., होल्कोला, एम. एवं तुओमिनेन, जे. (2023). युवाओं की उपभोक्ता पहचान के निर्माण में सामाजिक संचार माध्यमों की भूमिका। सेज मुक्त शोध पत्रिका, 13(2)।

ज़ुबॉफ़, एस. (2019). निगरानी पूँजीवाद का युग। लोक-विषय प्रकाशन।